Turkish Online Journal of Qualitative Inquiry (TOJQI)
Volume 11, Issue 3, September 2020: 1075-1076
DOI: 10.53555/tojqi.v11i3.10681

Research Article

Kavayanjali: Celebrating the Art of Poetic Dedication

काव्यांजलि : स्नेह ठाकुर का काव्य सौन्दर्य

डॉ.–मीना शर्मा'

प्रवासी साहित्य की दुनिया मे ं स्नेह ठाकुर एक दमदार रचनात्मक पहचान है। अपने देश भारत स े दूर सात समन्दर पार होकर भी उनकी रचनाओं में भारत, रचा–बसा है, घुला–मिला हुआ है। भौगोलिक दूरी या अलगाव भावनात्मक लगाव को कम नही ंकर पाया है। उनमे ं और उनकी रचनाओ ं में भरपूर सांस्कृतिक, धार्मिक, साहित्यिक, मार्मिक स्पेस पाया है। भारतीय परंपराओं के प्रति सजग एवं जागरूक कलाकार के रूप मे ं भारत उनके भीतर और उनकी रचनाओं के भीतर सदैव जीवित रहता है। भारतीयता की चासनी मे ं डालकर अपनी रचनाओ ं मे ं भारतीय परम्परा, सस्ं कृति की मिठास का े डाला है। हिन्द की पहचान हिन्दी से जुड़कर उनकी कविताएं भारतीय फ्लवे र, तेवर और क्लवे र का े एक अलग अदं ाज मे ं रचनात्मक रूप मं े प्रस्तुत करती ह ै।

'जीवन के रंग', 'जीवन निधि', 'जज्बातो ं का सिलसिला', 'अनुभूतियाँ', 'काव्यांजलि' आदि प्रमुख काव्य–सगं्रह मे ं कवयित्री ने भारतीयता का ताना–बाना, भारतीय मूल्य, भारतीय दर्शन, भारतीय परंपरा, भारतीय सस्ं कृति की खुशबु स े काव्य संग्रह सुगंधित हैं। तरह–तरह के फूल के साथ जीवन के धलू भी हैं, वसूल भी हैं, भारत की धूल भी है, पर साथ ही साथ विरूद्धों के सामजं स्य और जीवन वैभिन्य के दर्शन के अनुरूप फूल के साथ–साथ काटं े भी है। जीवन की पगडंडियों से गुजरकर सुखदुखात्मक रस की अनुभूतियो ं के प्रकाशन मे ं वो साथ वे रचना का े समर्पण करती हैं।

'जीवन की यह पगडंडी
है विभिन्न अनुभूतियों स े भरी राह मे ं आये फूल और काटं े भी दिन
काटं े, फूल की कीमत नहीं गावों के एहसास की पुष्पाजं लि अर्पित है
सभी का े यह काव्यांजलि।

'बिन काटं े फूल की कीमत नही' पंक्ति में जीवन के अर्थ का सार है, 'बिना दुख जीवन की कीमत नही' 'काटं े' प्रकारान्तर स े जीवन का दुख ही तो है, जिस प्रकार दुख का े छाटं कर जीवन का े ग्रहण नही ं किया जाता है उसी प्रकार काटं े का े छाटं कर फूल भी ग्रहण नहीं किया जाता है। यह दर्शन भारतीय परम्परा और दर्शन स े जुड़ जाती हैं जिसमें कहा गया है–
'सुख दुखात्मक रस' सुख दुख के सहकार का नाम रस है। जा े भवभूति के आत्यांतिक दर्शन 'करूणरस' एकमात्र है, उसका े भी संशोधित एवं सतं ुलित करता है। जीवन न तो सिर्फ सुख है और न ही सिर्फ दुख है। बल्कि मिश्रित रंग–बिरंगी इन्द्रधनुषी अनुभूतियों से भरी जीवन की राह है। जिसमे ं आह भी है और चाह भी है। जीवन के पथ पर दोनों स े ही होकर गुजरना है तो फिर रचना के पथ को सुख के फूल और दुख के काटं ों स े अलग कैसे किया जा सकता है? परन्तु मानवीय जिजीविषा के साथ दुर्गम पथ का े पार करने और पर्वतो ं का सीना चीड़ने, अलाघं ा पर्वतो ं का े पार करने की हौसल े की उड़ान भी है। रोके चाह े आँधियां, जमी ं या आसमां हमें पाना है लक्ष्य हमें हम हाल में हिम्मत से चलें, धरती हिल े कदमो ं तले क्या दूरिया, क्या फासले, मंजिल लग जायेगी गले चलना है हमे ं सुबह–शाम रूकना, झुकना नही ं हमारा काम अब तो यही रास्ता है अपना पहचान ले, यही सपना है अपना। हम भारतवासी, हम भारतवंशी कविता मे ं स्नेह ठाकुर भारतीयो ं की चिर परिचित मानवीय जिजीविषा और इस्पाती इरादो ं का े कविता मे ं उतार, सपनो ं को करतीं साकार। चलना ही जीवन है गति है और जीवित प्राणि का लक्षण है, जीवन की गत्यात्मकता, लयात्मकता, सघं र्ष स े उत्पन्न ऊर्जा मे ं है, जा े 'चरैवति चरैवति' के भारतीय मूलमत्रं के अनुरूप ह ै और भारतीय चिन्ताधारा की अबाध प्रवाह का हिस्सा है। जिसमे ं प्रतिकार का भी स्वर है और जीवन संग्राम का शंखनाद भी है–

'आये हैं रण–प्रांगण में, लिये जान हथेली पे मोड़ े कलाई मौत की, है हिम्मत हममें

रण–बाकं ुरे हम पहुंचेंग े मंजिल पे हो जा होशियार, हम हैं आसमां की बुलन्दी पे। मानवीय हौसल े की उड़ाने आसमां की बुलदं ी पे ल े जाता है। जो यह सत्यापित करता है कि सिर्फ पंखों स े उड़ान नही ं होती है और कोशिश करने वालो ं की हार नहीं होती है। पंखों से क्या हाते ा है, हौसले स े उड़ान होती है। और जबतक सघं र्षशील, सृजनशील मनुष्य के पास हौंसला है, मनुष्य कैस े रूके, कैस े टूटे! मनुष्य का प्रयत्न पक्ष जीवन की साधनावस्था निरंतर जारी रहती है। जा े सिद्धावस्था और निष्पत्ति स े कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। प्रक्रिया का परिणाम स े अधिक महत्व होता है। परिणाम प्रतिकूल भी हो सकता है, निराशा भी हाथ लग सकती है, किन्तु आजतक बिना प्रक्रिया के काइ ं परिणाम नही ं आया है। यह भी शत प्रतिशत सही बात है। प्रक्रिया क े आगे परिणाम है, डर के आगे जीत है।

स्नेह ठाकुर के काव्य मे ं अनुभूतियों का वैविध्य काव्य सौन्दर्य मे ं विविधता का श्रृंगार करता है। इन्द्रधनुषी अनुभूतियों स े काव्य सौन्दर्य मे ं इन्द्रधनुषी सौन्दर्य है। जिसमे ं जीवन के सभी ंकमे हैं, जीवन के सभी रंग शामिल हैं। जीवन अतरंगी भी है, सतरंगी भी है। एक रंग, एक भाव, एक स्थिति, एक सुख की तलाश करना मृग–मरीचिका की तरह है। जीवन का सत्य उस तितली की तरह है जिस े पकड़न े जाओ ता े वह फर्र स े उड. जाती है, और दूसर े डाल पे, दूसरे पुष्प पे बैठ जाती है। मनुष्य का सत्य और सुख बाहर नही ं भीतर है, औरों मे ं नहीं स्वयं की तलाश मे ं है। स्वयं के संधान में है। औरों को देखना, औरों के सुखों का े दूसरों की झालेा मे ं ही देखना, औरों के जीवन का े ही देखना और स्वयं उस सुख से सुख होकर दुखी होना, सत्य से भटकाव है, जीवन स े छलाव है। वास्तव मे ं सुख एक मृग–मरीचिका है 'सुख' नामक कविता मे ं स्नेह ठाकुर लिखती हैः–

''क्या सुख की परिभाषा है इसमे ं निहित कि वह मृग—मरीचिका है! जितना भागो इसके पीछे उतना ही आगे यह भागता है। अपना आंचल सदैव ही खाली और दूसरों का भरा लगता है। दूसरों के साथ सुख का तुलनात्मक अध्ययन और ब्वउचंतम करने की प्रणाली और पद्धति ही गलत है। यह रूचि, यह संस्कृति, यह मानसिकता ही मनुष्य का` सुख स` सूखा रखता है। अंदर स` खाली रखता है। ऐसा मनुष्य मृग मरीचिका मे ं ही रहता है। सुख की तलाश मे ं दर—दर भटकता है। दूर स` सुख जगमगाता, चमचमाता हुआ दिखता है, और पास आने पर वो सुख छटक जाता है, फिर वह एक और मृग—मरीचिका आगे देखता है, पुनः छटक जाता है, और इस तरह यह क्रम चलता रहता है। कवयित्री भ्रम और यथार्थ प्स्नेपवद और त्मंसपजल के फर्क का` बारीकी से अलग कर पृथक—पृथक कर सत्य की आन्तरिक प्रकृति का उद्घाटन और जीवन के प्रति अनुराग एवं प्रेम की लौ जलाती है। जीवन के प्रति स्नेह और अनुराग की बाती ही जीवन मे ं लौ जलाती है। सत्य का दीपक जलाकर निराशा, दुख, दिशाहीनता के अंधकार का ` दूर भगाती है। जीवन का` पूरी तरह खुद का` दे देना चाहिए। स्वयं के प्रति समर्पण का भाव, आत्मविश्वास, अनुराग का भाव और स्नेह ही वह सबं ल होता है जो व्यक्तित्व का रूपान्तरण कर देता है। व्यक्ति के जीवन का कायाकल्प कर देता है आरे परिणाम आपके समक्ष है—

'तार सीमेन्ट का सम्बल मिटे' तो युवक सामान घरौंड` में बदल जाता है। सहज—सुख—दुख का साथ
हो तो जीर्ण—शीर्ण कुटिया भी शीश महल बन जाती है। छाटे ा सा जीवन भी
बन जाता है पर्याय निर्मल निकेतन का जीवन को नापा` नहीं  अपने आपका` देकर देखो। परिस्थितियों के भवं र मे ं फंसी मनुष्य की जिंदगी जीवन के प्रति मनुष्य की आस्था, अनुराग, स्नेह, प्रेम की ताकत ही वो सीमेंट है जीवन का सबं ल बनता है, जीवन का` सबं ल मिलता है। मनुष्य परिस्थितियों का दास न बनकर परिस्थितियों का अतिक्रमण करते हुए कए विजयी योद्धा के समान भंवर स` बाहर निकलता है। होगी जय होगी जय पुरुषोत्तम नवीन की भाति ही व्यक्तित्व का रूपान्तरण सकं ल्प के निष्कंप बिन्दु पर ही जाता है। स्नेह—सहयागे की बेले चढ़ाने स` ईट—गारे से बना मकान भी
घर हो जाता है। प्रेम की बेले ं मनुष्य की दीवारों का` लाघं ाकर भी, बाधाओं को पार करक` भी आगे बढ़ाता है, ऊपर चढ़ाता है। जीवन स` पलायन, दुख से पलायन न कर जीवन का सामना, दुख का सामना इसी प्रेम और अनुराग की शक्ति के सामर्थ्य के सहारे या बल पर मनुष्य करता है। स्नेह ठाकुर की कविता मे ं स्नेह की धारा आद्यान्त प्रवाहित है। अविरल रूप स` गतिमान है जा` दुखवाद स` मुक्ति और आनन्दवाद की उपलब्धि भारतीय मनुष्य क` साथ—साथ मनुष्य मात्र का` कराता है—

'दुःख स` भागा` नहीं
इस भवं र मे ं फंस जिन्दगी का` जियो। ईंट गारे के बल पर खड़ी दीवारो ं
पर स्नेह—सहयागे की बेलें चढाओ तुम फिर देखा` सुख कैस` न मिलगे ा
तुम आगे—आगे होंगे, सुख तुम्हारे पीछे भागेगा।' फिर तो हौसलों की उड़ान कुछ ऐसी होती है कि व्यक्ति खुद का` ऊपर आसमा ं को नीचे, खुद का` आगे और जमाने का` पीछे पाता है। 'तुम आगे आग` होगे, सुख तुम्हार` पीछे भागेगा' लेकिन यह तभी सभ्ं ाव है जब तक मनुष्य स्वयं न जागेगा।। ईंट गारे के मकान को प्रेम एवं स्नेह स` घर न बनायगे ा, लेाग अक्सर मकान तो खरीद लते` हैं, बना लते` है। परन्तु उस मकान का` अक्सर घर नही बना पाते है। स्नेह—सहयोग के स्थान पर घृणा—असहयोग से भला घर बनता है कभी! और जब घर ही न बन पायेगा तो जीवन मे ं आनन्द और सौन्दर्य कैस` आ पायेगा। स्नेह ठाकुर की रचनाओ ं का काव्य सौन्दर्य जीवन मे ं इसी आनंद और सौन्दर्य के सधं ाान और विधान मे ं है। रचना का काव्य सान्दिर्य और मानवीय जीवन का आनन्द सैन्दर्य दोनों ही बिम्ब प्रतिबम्ब भाव के साथ दिखाई देते है। रचना के अन्दर का सत्य और सौन्दर्य रचना के बाहर का सत्य एवं जीवन सौन्दर्य अभदे हो जाते है। परस्पर विलीन हो जाते हैं। एक दूसरी मे ं अन्तःयात्रा करते है। जा ` मनुष्य की जय—यात्रा स` जाडे ता है। ओर मनुष्य की यही जय—यात्रा साहित्य का सारतत्व है। मानवीय भावों की रक्षा करते हुए मनुष्य की जीवन यात्रा जीवन की अनगढ़ पगडडं ी से होते हुए फूल एवं काटं ों के साथ अनुभूति वैचित्र्य की राह से गुजरकर आगे क्रमशः बढ़ती है। जिसमे ं फूल और काट` दोनों है। दोनो ं को ही मनुष्य के लिए छांटे` हैं। पर बांटे नहीं हैं। इस सत्य के दर्शन के साथ कि 'बिन काटं` फूल की कीमत नही। जा` स्नेह ठाकुर के काव्य सौन्दर्य का केन्द्रक है, छनबसमने है। काव्य सौन्दर्य की आत्मा है। 'काव्यांजलि' आत्मीय सौन्दर्य का एलबम है। जिसमे ं सौदर्य का आगार है सौदं र्य का प्रकार है। और
यही जरवन सौन्दर्य जीवन जीने का आधार है।

डॉ. मीना शर्मा